

प्रथम दिवस आवरण FIRST DAY COVER



चैत्य भूमि, मुम्बई
Chaitya Bhoomi, Mumbai

चैत्य भूमि, मुम्बई
Chaitya Bhoomi, Mumbai

भारत
INDIA



14-04-2013

चैत्य भूमि, मुम्बई

500

CHAITYA BHOOMI, MUMBAI

ई दिल्ली 110001 NEW DELHI

CHAITYA BHOOMI, MUMBAI

Chaitya Bhoomi is the tribute of a grateful nation to the memory of Dr. B. R. Ambedkar, popularly known as Babasaheb, who was born on 14th April, 1891 in a Mahar family at Mhow, Madhya Pradesh.

After his early education in the then Bombay, he went abroad for higher studies. On returning to India in 1923, he started a campaign aimed at annihilation of caste and reconstruction of the Indian society on the basis of equality of human beings. He stood for a united self-governing community of Indians with special constitutional safeguards for the depressed classes. It is a tribute to his patriotism and erudition that independent India decided to make use of his talents to consolidate the gains of freedom. As Minister of Law and Chairman of the Drafting Committee, Dr. Ambedkar played a leading role in the framing of the Indian Constitution. As an authority on Constitutional Law, his influence on politics, social reform, education and religion has been enormous.

On 14th October, 1956, Babasaheb embraced Buddhism. He continued the crusade for the upliftment of the downtrodden till his death on 6th December, 1956 at Delhi. His body was brought to Rajgriha at Dadar, Mumbai on the following day where his last rites were performed at a crematorium near the sea shore at Shivaji Park.

Chaitya Bhoomi was erected in 1962 at the place where his last rites were performed. Lakhs of people from all parts of the country still visit this place every year to pay homage to this great son of India.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on Chaitya Bhoomi.

Credits:-

Text : Based on the material furnished by the proponent.
Stamp/FDC : Brahm Prakash
Cancellation : Nenu Gupta



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	:	14 अप्रैल, 2013
Date of Issue	:	14 April, 2013
मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	7.25 लाख*
Stamps Printed	:	0.725 Million*
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक
Printer	:	India Security Press, Nasik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

* 1.15 लाख प्रस्तावक हेतु
* 0.115 million for the Proponent

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



चैत्य भूमि, मुम्बई
Chaitya Bhoomee, Mumbai

विवरणिका BROCHURE

चैत्य भूमि, मुम्बई

चैत्य भूमि, बाबासाहेब के रूप में लोकप्रिय, डा.बी.आर. अम्बेडकर की स्मृति के प्रति कृतज्ञ राष्ट्र की श्रद्धांजलि है। इनका जन्म एक महार परिवार में 14 अप्रैल, 1891 में महू, मध्य प्रदेश में हुआ था।

तत्कालीन बम्बई में अपनी प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत, वे उच्च शिक्षा के लिए विदेश चले गए। 1923 में भारत लौटने पर उन्होंने जाति-प्रथा को समाप्त करने तथा मानव की समानता के आधार पर भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का अभियान प्रारंभ किया। वे दलित वर्गों के लिए विशेष संवैधानिक संरक्षण की व्यवस्था के साथ भारतीय समुदाय के संयुक्त स्वायत्त शासन के पक्ष में थे। यह उनकी देशभक्ति एवं पांडित्य के प्रति श्रद्धांजलि ही है कि स्वतंत्र भारत ने आजादी की नींव को सुदृढ़ करने के लिए उनकी प्रतिभा का उपयोग करने का निर्णय लिया। कानून मंत्री तथा संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में डा. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। संवैधानिक कानून में एक प्रामाणिक विद्वान होने के नाते राजनीति, समाज-सुधार, शिक्षा और धर्म पर उनका अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

14 अक्तूबर, 1956 को बाबासाहेब ने बौद्ध धर्म को अंगीकार किया। 6 दिसम्बर, 1956 को दिल्ली में उनका निधन होने तक उन्होंने दलितों के उत्थान के लिए अपना संघर्ष जारी रखा। अगले दिन उनके पार्थिव शरीर को दादर, मुम्बई स्थित राजगृह लाया गया जहां समुद्र तट के निकट शिवाजी पार्क स्थित शवदाह गृह में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

चैत्य भूमि का निर्माण 1962 में उस स्थल पर किया गया जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया था। प्रत्येक वर्ष देश के कोने-कोने से लाखों लोग भारत के इस महान सपूत को श्रद्धांजलि देने उस स्थल पर आते हैं।

डाक विभाग चैत्य भूमि पर स्मारक डाक टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक-टिकट /

प्रथम दिवस आवरण : ब्रह्म प्रकाश

विरूपण : नीनू गुप्ता